IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 4, Issue 2, September 2024
Impact Factor: 7.57

दिनकर के काव्य में सामाजिक प्रभाव

डॉ. कमल किशोर यादव
सहायक प्राध्यापक हिन्दी
भाासकीय छत्रसाल महाविद्यालय पिछोर जिला शिवपुरी

शोध सार–

साहित्यकार समाज का दृष्टा और सृश्टा दोनों होता है। त्रिकालदर्शी वह वर्तमान के चौराहे पर खडा अपनी दृश्टि भूत और अनागत भविश्य दोनों ओर फेंकता है। वर्तमान तो उसकी आंखों के सामने सदैव ही बना रहता है। साहित्य उसकी आँखों के समग्र संदेश में बना रहता है। वह यथास्थितिवादी नहीं होता। उसकी आर्थिक सामाजिक स्थिति परिस्थितियाँ उसकी राजनीतिक धर्म संस्कृति व्यवहार आदि पर अपने साहित्य में झलकती हैं। वह भाषा के माध्यम से यह सब अभिव्यक्त करता है। कवि अथवा साहित्यकार अपने समय का सजग प्रहरी सच्चा संवेदन काव्यकार होता है। वह प्रवृति और प्रवाह से जुड़कर नव चेतना को उत्प्रेरित करता है। इसका ही कारण है कि प्रत्येक युग का साहित्य उसके युग का दर्पण नहीं बल्कि उस साहित्य निमार्ता के साथ वह युग जीवंत हो जाता है। उसका साहित्य समाज के लिए किसी अंश में प्रेरणास्रोत बनता है। सच्चे कलाकार होने के नाते कवि दिनकर ने भी अपने साहित्य में समाज की अनेक स्थितियों का वर्णन किया है। उन्होंने अपने समकाल उपेक्षित शोषित वंचित वर्तमानकालीन समाज की हुई पीड़ा तथा प्रवृत्ति और उन्नति का चित्र तो खींचा ही है साथ ही उन्होंने परिवर्तनशील समाज के नैतिक स्तर में जो ह्रास हुआ है उसका भी चित्र खींचा है। उन्होंने समाज में मनुष्य द्वारा हो रहे मनुष्य के शोषण उत्पीड़न दमन के साथ साथ मनुष्य की संकुचित स्वार्थ नीति समाज में प्रचलित जाति पाँति वर्णभेद एवं वर्ग भेद के झगड़े वैज्ञानिक प्रवृत्ति और उन विभीषिकाओं को उद्घाटित किया है। विषमता से ग्रस्त मानव जीवन ऊपर से शिष्ट और सुसंस्कृत दिखाई पड़ने वाला व्यक्ति भीतर से कितना अशिष्ट और कुशल होता है जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण आज के नागारिक समाज में देखा जा सकता है। समाज का शासक वर्ग अपने स्वार्थों की सिद्धि के हेतु मनुष्य मनुष्य में भेद भावना उत्पन्न करता रहता है। यह मनुष्य समाज को समानतावादी एवं न्यायसंगत स्थिति के बाहर ही नहीं रखता है अपितु उसकी पारंपरिक समस्याओं को और अधिक विकराल बना देता है। इसी कारण उसकी आंतरिक व्यथा अपनी अनुभूतियों को प्रकट करती है।

प्रस्तावना–

समाज के शोषित और दलित वर्ग के प्रति दिनकर मात्र साहित्यिक ही नहीं उनकी दशा को सुधारने के लिए एक क्रांतिकारी के रूप में प्रतिबद्ध दिखलाई देते हैं। दीनहीनों के प्रति सहानुभूति को सभी प्रकटित करते हैं

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 4, Issue 2, September 2024
Impact Factor: 7.57

किन्तु सहानुभूति प्रायः एक भावुकता मात्र हो के रह जाती है। उनके जीवन को प्रसारि कवि दिनकर सहानुभूति को सच्चाई एवं संवेदनशीलता से चित्रित सहानुभूति नहीं मानते हैं वह सहानुभूति कवि है। उनके भाव विश्वास के भाव हैं। उनका विश्वास था कि वह मानव के दुःख दर्द विषमता एवं विडम्बनाओं को दर्शाने में असमर्थ नहीं रह सकते हैं। छायावाद के सौंदर्य सुखविलास और कल्पनाओं विपत्तियों से मुंह फेर लेने वाले कवियों से उन्हें यह विरोध अस्वाभाविक नहीं था। विपत्तियों से मुंह फेर लेने वाला कवि कभी समाज की नारी जीवनसौंदर्य कोमलता करूणा यौवन के प्रति गीत गाता पुष्प गंध और सुरभि का उपासक बन लेन चाहता है। आवश्यक होता है कि कवि वहाँ नहीं हो जहाँ अमानविक मूल्यों एवं सामाजिक ढांचे की देशविपत्ति नहीं दिखाई देती है। बल्कि वह वहाँ हो जहाँ कोलाहल हो समस्याएँ हों असमर्थ लोगों की भीड़ हो क्यो पर पनपती रही हैं। इन प्रवृत्तियों का जो कुछ दुष्परिणाम हुआ है वह गुण के नाम पर प्रस्तुत है। ऊँच-नीच जात-पांत छुआछूत आदि के भेद-भाव ने ही समाज और सुव्यवस्थित समाज को छिन्न-भिन्न कर दिया है। समाज में फैली इस भ्रांति से समाज को बचाने का प्रयत्न प्राचीन काल से ही होता चला आ रहा है और यह क्रम आज भी जारी है।

साहित्य कलेवर

प्राचीन काल के कबीर तुलसी आदि जैसे कवियों बुद्धिजीवियों जैसे महानुभावों ने इसे दूर करने का प्रयत्न किया है। आधुनिक काल में स्वामी दयानन्द सरस्वती महात्मा गाँधी जैसे महानुभावों ने इस दिशा में अपना कदम उठाया। महात्मा गाँधी की प्रेरणा से स्वतंत्रता संग्राम आरम्भ हुआ। सुन्दर स्वस्थ एवं सुसंस्कृत समाज की स्थापना हुई। आरम्भ से ही समाज में उच्च वर्ग की रुचि की ही सभी प्रकार की सुविधाएं प्राप्त होती रही।

..रंग रूप और बनावट में कैसे एक जैसा इनमें फर्क बहुत होता है और अपने पाप को छिपाने वाले साधुजन की सच्चरित्रता की ओर संकेत करता है। ऐसे साधुजन के प्रति भाव विचार स्पष्ट सम्पन्न अथवा निषेध की स्थिति ही है। मनुष्य की विचारता उसके गुणों के अनुसार होती और कुछ गुण उन उसके जन्म सम्बन्धित बातें में परिणत करें दृष्टि होती है जब वह देखता–

छोटे कुल पर निन्दा यहां होते तब वह किसे आश्रय।
जब जाति छोटी हो तो फिर कैसे हमारे गुण छोटे।

जाति नहीं न बड़े बनें हम रहें सदा गुण छोटे छोटे अतः वह सुसंस्कृत समाज के नव निर्माण के लिए जातिवाद के अंध विश्वास से मुक्त जीवन ठीक नहीं। किसी भी व्यक्ति को केवल जन्मजात गुणों पर आधारित करके मर्यादा प्रतिष्ठित नहीं मिलनी चाहिए। जातिवाद की तुला पर नापनेवाले विचार को निश्चित रूप से भारत में फैले जाति-पांति ऊँच-नीच के भेद भाव ने यहाँ की सारी नैतिक मूल्यों सहज गुणों पर पर्दा डाल दिया है। उसकी

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 4, Issue 2, September 2024
Impact Factor: 7.57

एकताए संगठनीयता जाती रही है। समाज का बड़ा वर्ग बेटा होने की स्थिति में वह हीनता द्वारा पातालगामी हुआ है। धर्म का प्रयोग उसके लिए संत्रास बन गया है। गुलामों के सरदारों में युद्ध की जो भावना ऊँच जातिवाद का वह घटा था तथा जिसने समाज को तितर बितर कर दिया था। वह वही जिसने कर्म के पुण्य में दुर्बलों को अपवित्र घोषित कर यह भावना भरी। यही शोषणशीलता तथा समाज के तितर बितर होने की स्थिति है। मानवता की एकता को समाप्त कर तितरबितर किया गया वही तितर बितर विषमता राष्ट्र के विनाश के गर्त में गिराने में सफल हुआ। जो धरती के निर्धन अभिजात अशक्त तथा समाज से प्रताड़ित दीन हीन वर्गों को अपनी दृष्टि और दिशा यदि कोई हमारा सर्वस्व अपहरण कर रहा हो हमारे श्रमणीयों पर गुलामी थोप रहा हो। उस समय तपस्या अहिंसा तप और शांति की दुहाई हम हमें पतन की ओर ले जाती है। उस समय अत्याचार के विरुद्ध शक्ति अपनी पीड़ा प्रकट करना ही हमारा परम धर्म है। उस पर कृपा करें न्याय करें यही न्याय है। अधिकार की रक्षा ही स्वतंत्र प्रजातांत्रिक राष्ट्र होने का धर्म है। उस पर मन मिलन हमारा परम धर्म और जन्मसिद्ध अधिकार है। केवल शांति का आधार न्याय ही है। तात्पर्य यह है कि सामाजिक नवनिर्माण की भावना को अभिव्यक्त कवि दिनकर ने कर्ण के माध्यम से समाज पर तीखा प्रहार किया है।

जग में जो भी निर्दलित प्रताड़ित जन हैं
जो भी विपन्न हैं निगलित हैं निर्धन हैं

नारी को अपने हृदय खण्ड की भी त्याग करना पड़ता है।

यदि कोई हमारा सर्वस्व अपहरण कर रहा हो हमारे श्रमणीयों पर गुलामी थोप रहा हो। उस समय तपस्या अहिंसा तप और शांति की दुहाई हम हमें पतन की ओर ले जाती है। उस समय अत्याचार के विरुद्ध शक्ति अपनी पीड़ा प्रकट करना ही हमारा परम धर्म है। उस पर कृपा करें न्याय करें यही न्याय है। अधिकार की रक्षा ही स्वतंत्र प्रजातांत्रिक राष्ट्र होने का धर्म है। उस पर मन मिलन हमारा परम धर्म और जन्मसिद्ध अधिकार है। केवल शांति का आधार न्याय ही है। तात्पर्य यह है कि सामाजिक नव निर्माण की भावना को अभिव्यक्त कवि दिनकर ने कर्ण के माध्यम से समाज पर तीखा प्रहार किया है। जग में जो भी निर्दलित प्रताड़ित जन हैं

जो भी विपन्न हैं निगलित हैं निर्धन हैं

नारी को अपने हृदय खण्ड की भी त्याग करना पड़ता है।

वे स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ वर्षों बाद भी सत्य विधान नारी तथा शिशु के लिए अकुलाते बालक को देख व्याकुल हो उठते हैं

देख जहाँ का दृश्य आज भी अंतःस्थल हिला देता है

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 4, Issue 2, September 2024 Impact Factor: 7.57

मां को लज्जा वस्त्र और शिशु को न क्षीर मिलता है।

पूछ रहा है जहाँ चकित हो जन जन देख अकाल

सात वर्ष हो गयेए राह में अटका कहाँ स्वराज

निश्कर्श –

देश की स्थिति से उन्हें घोर निराशा असंतोष होता है। किन्तु वे अपने दुखद हृदय से ही वे जनता के बीच प्रकाश की किरणें बिखेरने का प्रयत्न करते हैं। निराशावादी नहीं आशा की किरणें उन्हें प्रेरणा देती हैं

ओ विशाल तम तोम चतुर्दिक घिरी घटाओं।

कब जन्मेगी अशनि तुम्हारी व्याकुलता से

धुओं और उमस में जो छटपटा रहा है वह प्रकाश कब तक खुलकर बाहर आयेगा दिनकर की इस क्रान्ति आवेश का प्रवाह है। दिनकर भावनाओं को उभारने में योग्य हैं। उच्छ्वासी पर्वत मूल को हिला देने वाली और वेगपूर्ण लहरों की रचना करते हैं।

संदर्भ–

1. हुंकार, दिनकर पृश्ठ, 72–75
2. वही, पृश्ठ, 24, 25
3. चक्रवाल भूमिका–दिनकर, पृश्ठ 34
4. हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास, पृश्ठ– 480
5. रश्मिरथीः दिनकर, पृश्ठ–03
6. वही, पृश्ठ–15
7. वही, पृश्ठ–15
8. वही, पृश्ठ–06
9. रश्मिरथी, दिनकर, पृश्ठ–60